Hobbes's Social Contract Theory

राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में Hobbes एक ऐसे राजनीतिक दार्शनिक के रूप में उपस्थित होता है जिसने निरंकुश राजतंत्र को खुले शब्दों में समर्थन किया। हॉब्स की राजनीतिक विचारधारा में सर्वप्रथम स्थान उसके सामाजिक समझौता सिद्धान्त का है, जिसका वर्णन उसने विभिन्न चरणों में किया है जो निम्न प्रकार है :

1. मानव स्वभाव - हॉब्स मानव स्वभाव का चित्रण एक स्वार्थी और झगड़ालू प्राणी के रूप में करता है, जो सदैव स्वयं अपने ही हित साधन की चेष्टा में लगा रहता है। अपने स्वार्थ के लिए वह निरन्तर लड़ाई-झगड़ा करता रहता है। उसका मुख्य उद्देश्य अपने यश को बढ़ाना होता है और उसमें शक्ति पाने की लिप्सा बराबर बनी रहती है। यह लिप्सा उसे बराबर क्रियाशील रखती है और यह इतनी तीव्र होती है कि इसकी वजह से वह बराबर बेचैन रहता है। मनुष्य की यह लिप्सा तभी लुप्त होती है जबकि उसकी मृत्यु होती है। शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों के दृष्टिकोण से प्रकृति ने सब मनुष्यों को इतना बराबर बनाया है कि यद्यपि एक व्यक्ति दूसरे की अपेक्षा शारीरिक रूप से अधिक बलिष्ठ और बौद्धिक रूप से अधिक तीक्ष्ण हो सकता है, किन्तु यदि सब बातों को ध्यान में रखा जाय तो मनुष्य-मनुष्य में अन्तर कुछ अधिक नहीं है। इस प्रकार अपने लक्ष्य प्राप्ति की योग्यता सभी व्यक्तियों में समान है।

2. प्राकृतिक अवस्था - राज्य की उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति को हॉब्स प्राकृतिक अवस्था की संज्ञा देता है। प्राकृतिक अवस्था की चर्चा करते हुए हॉब्स बताता है कि उसमें मनुष्य का जीवन एकाकी, निर्धन घृणित, पाशविक तथा अल्प होता है। उसी के शब्दों में "There is Continual fear and danger of violent death; and the life of man solitary poor, nasty, brutish and short." हॉब्स प्राकृतिक अवस्था की इस कल्पना को किसी

ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर सिद्ध नहीं करता, वरन् अनुमान करता है कि प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य की दशा इसी से मिलती-जुलती रही होगी। इस सोच के पीछे इंगलैण्ड की गृह युद्ध था।

3. प्राकृतिक कानून – प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों के लिए हॉब्स ने प्राकृतिक कानूनों का वर्णन किया है जिसका पालन करके एक मनुष्य अपने प्राकृतिक अधिकारों का उपयोग कर सकता है। हॉब्स का मानना है कि मनुष्य के प्राकृतिक अधिकार समान होने से सबको एक दूसरे की हत्या और लूटमार का अधिकार प्राप्त था जिससे जीवन पूर्णतः असुरक्षित था लेकिन सभी लोग जीवन को सुरक्षित बनाये रखना चाहते थे। स्पष्ट है कि प्राकृतिक अधिकार तो एक निरन्तर संघर्ष की स्थिति को जन्म देते हैं किन्तु इसके विपरीत प्राकृतिक कानून बुद्धि द्वारा निर्दिष्ट वे नियम हैं जिनके अनुसार आचरण करके व्यक्ति सुगमता पूर्वक अपने जीवन की रक्षा कर सकते हैं और प्राकृतिक अवस्था की अराजकता से बच सकते हैं। हॉब्स इस प्रकार के 19 प्राकृतिक नियमों की कल्पना करता है जिसमें से तीन (03) प्रमुख हैं जिनसे ही अन्य प्राकृतिक कानून निकलते हैं :

(1) प्रत्येक मनुष्य को शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को शान्ति स्थापित करने के लिए तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की दृष्टि से अपने सब अधिकारों का परित्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए, बशर्ते अन्य व्यक्ति भी ऐसा करने के लिए सहमत हो।

(3) व्यक्ति को अपने समझौतों का पालन करना चाहिए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रकृति के ये नियम उन शर्तों की व्याख्या करते हैं जिनके आधार पर समाज का ढांचा खड़ा किया जा सकता है।

4. सामाजिक समझौता और राज्य की उत्पत्ति – प्राकृतिक अवस्था में प्राकृतिक नियम विद्यमान थे,

किन्तु बाध्यकारी शक्ति के अभाव में सभी व्यक्तियों द्वारा उनका पालन नहीं किया जाता था। अतः आवश्यकता एक ऐसी संस्था की थी, जो शक्ति के आधार पर सभी व्यक्तियों को शान्त रखने के लिए बाध्य कर सके।

स्पष्ट है कि इस अराजक स्थिति से निकलने के लिए लोगों ने अपने सारे अधिकार एक व्यक्ति या व्यक्ति समूह को समर्पित करते हैं और प्रत्येक व्यक्ति उस सम्प्रभु की आज्ञा का पालन करता है। यह वह सिद्धान्त है जिसके आधार पर राज्य का जन्म होता है। हॉब्स का मानना है कि समझौते से स्थापित सम्प्रभु सर्वोच्च सत्ता सम्पन्न और निरंकुश है। उसका प्रत्येक आदेश कानून और उसका प्रत्येक कार्य न्यायपूर्ण है।

सामाजिक समझौते के सिद्धान्त को प्रतिपादित कर हॉब्स यह सिद्ध करता है कि वह न तो राज्य को ईश्वर द्वारा उत्पन्न मानता है और न किसी प्राकृतिक विकास का परिणाम, वरन वह राज्य को मानव निर्मित एक ऐसा कृत्रिम साधन मानता है जिसे व्यक्ति द्वारा अपनी कुछ निश्चित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्मित किया गया है। अतः उसके राज्य साध्य की ओर ले जानेवाला एक साधन मात्र है, स्वयं में साध्य नहीं।

आलोचकों द्वारा हॉब्स के सामाजिक समझौते के सिद्धान्त की आलोचना की गयी है। आलोचकों का मानना है कि मानव स्वभाव के प्रति उसका दृष्टिकोण एकांगी, अतिरंजित और निराशावादी है। उसके अनुसार मनुष्य स्वभावतः स्वार्थी, कपटी, हिंसक और युद्धप्रिय पशु बताया है। उसने उसकी सामाजिकता को अस्वीकार किया है। वाहन ने हॉब्स की आलोचना इस आधार पर भी की है कि यह कैसे माना जा सकता है कि मानव जैसा व्यक्ति एकाएक ऐसी अवस्था जिसमें युद्ध की

जगह शान्ति का साम्राज्य, सद्भाव तथा भाईचारे से युक्त मानव समाज कल्याण के मार्ग पर चलने लगे।

जो भी हो, हॉब्स के समझौते के सिद्धान्त के सम्बन्ध में एक विशेष बात यह है कि हॉब्स का सिद्धान्त निरंकुश राजा का नहीं, वरन् निरंकुश राज्य का है। हॉब्स की विचारधारा के अनुसार राजतंत्र, कुलीनतंत्र या जनतंत्र किसी भी प्रकार की शासन व्यवस्था उचित है क्योंकि जहाँ तक मनुष्य के हित का सम्बन्ध है, प्राकृतिक अवस्था की अराजकता की अपेक्षा किसी प्रकार की सरकार अच्छी है, जिसमें शान्ति तथा व्यवस्था कायम करने की सामर्थ्य हो।

Scanned with CamScanner